चीते इम्पोर्ट करने के बाद अब अगला नंबर टाइगर का ?

विवेक कुमार

फरीदाबाद (म.मो) अचानक इंडिया टीवी के एक चापलूसी पोस्टर पर नजर पड़ी जिसमे "मोदी की चीते वाली चाल" टाइटल से एक शो किया जाना बताया गया था। जबकि पोस्टर में मोदी के साथ तेंदुए की तस्वीर फॉटोशॉप की हुई थी। सोचा कि जब देश के मुख्य टीवी चैनल को ही नहीं पता कि तेंदुए और चीते में क्या अंतर है तो मोदी ने इतना बड़ा चीता मँगा कर ख्वामखाह ही इतने नोट फूँक दिए जबकि बचे पैसों से एक कुर्ता और सिलवा लेते। अबे जंगली बिल्ली पकड़ के चीता बोल देते तो भी क्या ही पता चलता किसी को और चल जाता तो क्या ही हो जाता।

फिर थोड़ा और सोचा कि यार चीते आए हुए हैं, हम कब देखेंगे उसे ? इंटरनेट खोला तो देखा कि भाई एक तो प्रेग्नेंट है। फिर दूसरी खबर देखी कि नहीं है। तब तक अखबार उठा लिया तो देखा कि प्रेग्नेंट थी पर मिसकैरेज हो गया ऐसा किसी अधिकारी ने बताया। मुझे तो लगता है कि चीते ने मोदी के साथ वही तेंदुए वाला इंडिया टीवी का पोस्टर देख लिया कि नाम तो मेरा और फोटो सौतन की।

ऐसा ही एक पोस्टर गाय के नाम पर भी पहले दिल्ली के टोडापुर गाँव में दिखा था कि "गाय को बचाना है उसे राष्ट्रीय पशु बनाना है" और ठीक उसके नीचे गाय मरी पड़ी थी। बहरहाल हम इस बात की ताल ठोंक कर चुनौती देते हैं कि मोदी जी और उनके चेले विडाल बिल्लियों की बिंदी प्रजाति की फोटो देखकर नाम और उनका प्राकृतिक आवास बता दें तो हम माँ लेंगे कि दुनिया का सारा ज्ञान पुराणों में है। खैर, चीता इम्पोर्ट हुआ और उसके नाम का भी फीता कटा पर असल में हम दुनिया भर में जिस जानवर के नाम से जाने जाते हैं उसका नाम है बाघ और उसके लिए क्या किया सरकार ने इसपर आजकल कोई बात ही नहीं होती। तो यहाँ से बात होगी भारत में बाघ की क्योंकि उसे बनाना वनाना कुछ नहीं वह पहले ही राष्ट्रीय पशु है और उसे किसी मोदी के फर्जी मार्केटिंग की भी जरूरत नहीं। उसे तो जरूरत है सरकार की ईमानदार कोशिश की।

कम ही लोग यकीन करेंगे कि बाघों के अंगों की तस्करी में अव्वल है भारत, जबकि चीन बहुत पीछे है। 23 वर्षों में बाघों की अवैध तस्करी की दुनिया भर में कुल 2,205 घटनाएं सामने आई हैं जिनमें से 34 फीसदी यानी 159 घटनाएं अकेले भारत में दर्ज की गई हैं।

"डाउन टू अर्थ" पत्रिका की रिपोर्ट की माने तो एक तरफ देश में जहां बाघों को बचाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं वहीं साथ ही भारत में इनका अवैध व्यापार बाकी कई अवैध व्यापारों की ही तरह दिन रात बढ़ रहा है। पिछले 23 वर्षों में इनकी अवैध तस्करी की दुनिया भर में कुल 2,205 घटनाएं सामने आई हैं जिनमें से 34 फीसदी यानी 159 घटनाएं अकेले भारत में दर्ज की गई हैं। जो 893 यानी जब्त किए गए 26 फीसदी बाघों के बराबर है।

रिपोर्ट के अनुसार पिछले 23 वर्षों में जनवरी 2000 से जून 2022 के बीच 50 देशों और क्षेत्रों में बाघों और उनके अंगों की तस्करी की यह जो घटनाएं सामने आई हैं उनमें कुल 3,377 बाघों के बराबर अंगों की तस्करी की गई है। गौरतलब है कि दुनिया में अब केवल 4,500 बाघ ही बचे हैं, जिनमें से 2,967 भारत में हैं । बताते चलें कि 20वीं सदी के आरम्भ में इनकी संख्या एक लाख से ज्यादा थी।

ऐसे में यदि इसी तरह उनका शिकार और तस्करी होती रही तो यह दिन दूर नहीं जब दुनिया में यह विशाल बिल्ली प्रजाति जल्द ही विलुप्त हो जाएगी। गौरतलब है कि इनकी बरामदगी 50 देशों और क्षेत्रों से हुई है, लेकिन इसमें एक बड़ी हिस्सेदारी उन 13 देशों की थी जहां अभी भी बाघ जंगलों में देखे जा सकते हैं।

रिपोर्ट से पता चला है कि पिछले 23 वर्षों में तस्करी की जितनी घटनाएं सामने आई हैं उनमें से 902 घटनाओं में बाघ की खाल बरामद की गई थी। इसके बाद 608 घटनाओं में पूरे बाघ और 411 घटनाओं में उनकी हड्डियां बरामद की गई थी। ट्रैफिक ने आगाह किया कि है कि बरामदी की यह घटनाएं बड़े पैमाने पर होते इनके अवैध व्यापार को दर्शाती हैं लेकिन यह इनके अवैध व्यापार की पूरी तस्वीर नहीं हैं क्योंकि बहुत से मामलों में यह घटनाएं सामने ही नहीं आती हैं।

2018 के बाद से भारत में बाघों के अवैध शिकार की घटना बढ़ी हैं। भारत और वियतनाम में इस तरह की घटनाओं में वृद्धि दर्ज की गई है। भारत में तो बाघ से जमीन खाली कराने के नए तरीके मोदी राज में स्थापित होते जा रहे हैं जिनमे से अवनी नामक बाघिन का यवतमाल में प्रशासन द्वारा मारा जाना प्रमुख घटना है। इसी पर विद्या बालन की फिल्म शेरनी भी बनी।

रिपोर्ट में जो आंकड़े सामने आए हैं उनके अनुसार 2022 की पहली छमाही में भी स्थिति गंभीर बनी हुई है। इस दौरान इंडोनेशिया, थाईलैंड और रूस ने पिछले दो दशकों में जनवरी से जून की तुलना में बरामदी की घटनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। अकेले इंडोनेशिया में 2022 के पहले छह महीनों में करीब 18 बाघों के बराबर अवैध तस्करी की घटनाएं सामने आई है जो 2021 में सामने आई तस्करी किए बाघों की कुल संख्या से भी ज्यादा हैं।

इन आंकड़ों को देख कर मोदी और उनके चेलों को अगले चुनाव में बैठे बिठाए एक भयंकर प्रचार का साधन मिल सकता है, पर कैसे ? हम बताते जाते हैं। एक अनुमान के मुताबिक शायद हम आखिरी पीढ़ी हो सकते हैं जो बाघों को उनके प्राकृतिक आवास में देख रही है। इसके बाद शायद वे भी जंगलों से विलुप्त हो जाएँ और मोदी जी को किसी अन्य देश के चिड़ियाघर से टाइगर इम्पोर्ट करने का सुनहार आपदा स्वरूप अवसर मिल जाए।

खट्टर सरकार के सिर एक और मौत

नगर निगम के नाले में डूबा 11 वर्षीय कुनाल

फरीदाबाद (म.मो.) दिनांक 5-11-22 शनिवार की रात को निकृष्ट व भ्रष्टाचार में डूबे निगम प्रशासन के नाले में डूब कर 11 वर्षीय कुनाल की मौत हो गई।

मामला फरीदाबाद जवाहर कालोनी की 60 फुट रोड एयरफ़ोर्स चौक पर बने करीब 12 फीट गहरे खुले नाले का है। जिसमे रात के दौरान 11 वर्षीय कुनाल की गिरने से मौत हो गई , नाले के उपर कचरा इतना भरा हुआ था कि अगर उसमे कोई गिर जाए तो कुछ भी दिखाई न दे, ऐसा ही उस रात भी हुआ। इस नाले के आसपास लाईट की कोई व्यवस्था नहीं है, जिसके चलते नाले के पास काफी अँधेरा रहता है।

यहाँ पर रहने वाले लोगों ने बताया कि इस नाले में इस तरह गिरने की यह कोई पहली घटना नहीं है, सिर्फ रात ही नहीं यहाँ दिन में भी इस तरह के कई मामले घटित हो चुकें है। अब इतनी घटनाएं घटित होने के बाद इस नाले के चारों तरफ लकड़ी लगाकर रुकावट की गई और तीन स्ट्रीट लाईटों की व्यवस्था की गई है।

क्या हुआ था घटना वाले दिन

मृत कुनाल के परिजनों ने बताया की घटना की रात लगभग 10 बजे उसकी माँ वर्षा की तबियत खराब थी, वह दवा खाकर लेटी हुई थी। कुनाल ने अपनी माँ से चौमीन खाने की बात कही। कुनाल की बड़ी बहन दीप्ति और वह खुद अपने घर की गली से बहार रेहड़ी पर चौमिन लेने गए। दीप्ति चौमिन लेकर घर आ गई थी लेकिन कुनाल नहीं आया था।

लगभग 15-20 मिनट बाद घर की गली के बहार भीड़ की जानकारी दीप्ति ने अपनी माँ को दी और बताया कि कोई लड़का नाले में गिर गया है, इस पर कुनाल की माँ नाले के नजदीक पहुचीं और वहां पड़ी चप्पल देखते ही पहचान लिया कि उसके बेटे की हैं। नाले के नजदीक खड़े लोग कोशिश कर रहे थे कि किसी तरह से उस 12 फुट गहरे नाले से बच्चे को निकाला जाए, पर नाले में पोलीथिन की भरमार और अन्धेरा होने की वजह से यह काम मुश्किल दिख रहा था। लोगों ने बताया की रात 11 बजे के आसपास फायर ब्रिगेड और पुलिस पहुंच चुकी थी। फायर ब्रिगेड टीम अपने साथ कोई भी गोताखोर नहीं लाये थे वे लोग भी फर्जी कोशिश कर रहे थे। तभी उस भीड़ में मौजूद रामेश्वर और अभिशेख नाले में उतरे और उस बच्चे को ढूंढने लगे। लगभग आधे घंटे की जद्दोजहद के बाद कुनाल मिला तो उसे एम्बुलेंस के द्वारा बीके अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टर ने उसे जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। इस बात से गुस्साए लोग और बच्चे के परिजन मृत शरीर को लेकर जवाहर कालोनी की 60 फुट रोड एयरफ़ोर्स चौक पर प्रदर्शन करने लगे। लोगों का प्रदर्शन देख कुछ ही समय में पुलिस के कई बड़े अधिकारी मौके पर पहुचे और चौक पर लगीं भीड़ को हटाने की कोशिश करने लगे। इसी दौरान भीड़ को हटाने को लेकर बच्चे के परिजनों और लोगो से डीसीपी एनआईटी नरेंदर सिंह से लोगों की कहा सुनी हो गई।

पुलिस और कुछ समाजसेवियों द्वारा जैसे-तैसे करके गुस्साए परिजन और भीड़ को मृत शरीर के पोस्टमार्टम के लिए यह कहकर मनाया गया कि पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही की जायगी और उसे बीके अस्पताल भेजा गया। अगले दिन रविवार को एक बार फिर से कुनाल के परिजन और लोगों ने एयरफ़ोर्स चौक पर खट्टर सरकार के प्रशासन व स्थानीय कांग्रेसी विधायक नीरज शर्मा के खिलाफ नारेबाजी करके सड़क को जाम कर दिया। जिसकी वजह से लोगों को आवाजाही में काफी परेशानी आने लगी। इस पर पुलिस ने कुछ लोगों के खिलाफ सड़क को जाम करने के जुर्म में मामला दर्ज कर दिया। इतने पर भी जब लोग नहीं माने तो पुलिस वालों ने कुनाल के पिता अर्जुन सिंह को अपनी शिकयात लिखने को कहा। अर्जुन सिंह ने एसडीओ एमसीएफ नवीन कुमार व जेई तथा पूर्व पार्षद (मौजूदा) के खिलाफ शिकायत लिख कर पुलिस को दे दी। इस कार्यवाही के बाद कुनाल के परिजन और लोग शांत हुए। इसके बाद मृत शरीर को उसके क्रियाकर्म के लिये ले जाया गया।

डीसीपी एनआईटी नरेंदर सिंह से लोगों की हुई कहा सुनी ?

शनिवार रात जब गुस्साई भीड़ हंगामा कर रही थी , तब डीसीपी एनआईटी नरेंदर सिंह अकड़ के साथ लोगों से पेश आने लगे। हुआ कुछ यूँ था, जब नरेंदर सिंह को लोग यह कह रहे थे कि अगर प्रशासन उस नाले को ढक देते तो यह सब हादसा नहीं होता। इस पर डीसीपी ने कहा कि उसकी माँ ने उस बच्चे को क्यों छोड़ा था, क्या उसकी कोई गलती नहीं है ?

इतना सुनकर कुनाल की माँ ने उनसे यह कह दिया कि अगर आपका बेटा वहां गिर जाता तो तब भी आप ऐसा ही कहते , इतना सुनते ही नरेंदर सिंह बुरी तरह से बोखला गए और कहने लगे की मेरे बेटे से कम्पेयर करेगी ? चुप रहिये आप लिमिट को क्रॉस कर रही हो।

मीडिया को दिए बयान में कांग्रेसी विधायक नीरज शर्मा ने कहा कि भाजपा सरकार के भ्रष्टाचार का शिकार हुआ है कुनाल। उनका कहना था की जब इस नाले का निर्माण करवाया गया होगा तो उसमें नाले को कवर करने का काम भी था , जो नहीं किया और ठेकेदार को पेमेंट कर दी गई। इसके साथ ही इस सड़क पर हाई मास्क लाईट लगानी थी जोकि यहाँ से शिफ्ट करके जनप्रतिनिधी के कार्यालय के आगे लगा दी गई। अगर अधिकारी अपना काम ईमानदारी से करते तो आज यह हादसा नहीं होता, सुधी पाठक जान ले कि नीरज शर्मा इस क्षेत्र के विपक्षी विधायक हैं , जिनकी प्रशासन सुनता नहीं है। संदर्भवश यह नाला उनके पिता स्वर्गीय शिवचरण लाल शर्मा के वक्त में बना था। वे इस क्षेत्र के विधायक तथा मंत्री रहने से पूर्व नगर निगम के सीनियर डिप्टी मेयर भी रह चुके थे। इसलिए सवाल तो उन पर भी बनता है।

बच्चे की हत्या के विरोध में प्रदर्शनकारियों को सजा देने के लिए करीब 60 लोगों के खिलाफ पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया और 2 लोगों को गिरफ्तार भी कर लिया।

सरकार की और यह साफ संदेश है कि व इसी प्रकार से जनता की हत्या कराती रहेगी और विरोध प्रकट करने वालों को हवालात में बंद करती रहेगी।

इस पूरी घटना को देखते हुए यह स्पष्ट है कि खट्टर सरकार के भ्रष्ट एवं निकम्मे,प्रशासन की मेहरबानी से आये दिन शहरवासी गड्ढों, नालों, सीवर के मैनहोलों में गिरकर तथा आवारा पशुओं की वजह से मौत का निवाला बन रहें हैं। दोषी जिम्मेदार अधिकारियों के विरुद्ध कोई कार्रवाई करने की बजाय सरकार उल्टे प्रदर्शनकारियों के विरुद्ध कार्रवाई करके उनके प्रदर्शन जैसे लोकतांत्रिक अधिकारों का ही हनन करती है।

खुद बीमार पड़ा बीके अस्पताल क्या इलाज करेगा

फरीदाबाद (म.मो.) बीके अस्पताल शहर का एकमात्र सरकारी अस्पताल है , जो अपनी दुर्दशा से यहाँ के प्रशासन , विधायक और मंत्री की पोल खोल देता है। चाहे वे लोग जितना भी अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बने, झूठे अवार्ड जीतने की बात कहें यहाँ के हालात इन लोगो के चरित्र को बयां करते है। ऐसा कोई ही दिन जाता होगा जब इस अस्पताल मे कोई गरीब न सताया जाता हो। दवाईयों की कमी के चलते दर्द से न तड़पता हो या किसी दलाल के चंगुल में न फंसता हो। यहाँ की गंदगी का तो कहना ही क्या और इन सब के बारे में जब यहाँ की पीएमओ को बताया तो उन्हें लगता है की उन्हें टारगेट किया जा रहा है।

इस अस्पताल में कई बार कुछ मामले इंसानियत को शर्मसार कर देते हैं ,पर शर्म तो उन्हें आये जो जिम्मेदारियों को समझे और यहाँ के हालात को देख कर ऐसा लगता है की यहाँ के प्रशासन को न तो शर्म है न ही कोई जिम्मेदारी का अहसास। दिनांक 30 अक्टूबर रविवार को पल्ला के नजदीक से आये दुलीचंद जिसे शनिवार रात को दिल्ली से 10-11 बजे करीब अपनी नौकरी पूरी करके अपने घर लौटते समय फरीदाबाद में किसी अज्ञात बाईक ने टक्कर मार दी, चोट इतनी ज्यादा थी की बड़ी ही मुश्किल से दुलीचंद अपने घर पंहुचा।

अगले दिन दुलीचंद और उसकी पत्नी जो की अपनी शारीरिक कमजोरी की वजह से चलने में कामजोर है अपने पति को लेकर सुबह 11 बजे बीके अस्पताल पहुँची और आपातकालीन विभाग से अपना कार्ड बनवाया, लम्बे इन्तजार के बाद डाक्टर ने उसे देखा और उसकी चोट की वजह जानी जब दुलीचंद ने डाक्टर से अपनी आपबीती बताई तो डाक्टर ने उसे एमएलआर कटवाने की सलाह दे डाली। जिसकी वजह से उन्हें दोबारा कार्ड बनवाना पड़ा। कार्ड तो बन गया अब बारी थी एमएलआर की पर यह बनता कैसे क्योंकि यहाँ के कंप्यूटर ऑपरेटर को तो दस्त लगे थे, जिसकी वजह से वह तो आया ही नहीं था। इस बात की जानकारी उसने अपने स्टाफ को तो दे दी थी पर उन्होंने उसके जगह कोई अन्य ऑपरेटर वहां नही बिठाया था। जिसके चलते दुलीचंद व अस्पताल में आये न जाने कितने लोगो को परेशानी आई होगी। इस परेशानी से किसी भी अधिकारी का कोई लेना-देना नहीं है और वैसे भी आज रविवार छुट्टी का दिन था। अगर गलती से फोन करके अधिकारी से पूछ लिया जाता तो वह यही कहते की छुट्टी के दिन तो चैन से रहने दिया करो। बाकी दिन तो आप टारगेट करते ही हैं। ये अधिकारी लोग भी बहुत ही समझदार है , छुट्टी के दिन तो ये काम कर ही नहीं सकते और काम वाले दिन ये लोग अपने एसी कमरों से निकलते ही नहीं अस्पताल का सत्यानाश नहीं होगा तो और क्या ?

दुलीचंद को ऑपरेटर का इन्तजार करते करते शाम के चार बज चुके थे, अब डाक्टर ने उसे अगले दिन आने को कह दिया था। अगले दिन सोमवार को फिर वह अपनी किस्मत को कोसने के लिए अस्पताल में सुबह 11 बजे पहुंच गया था। वह खुद तो चोट की वजह से ठीक से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था, अपनी पत्नी को उसने लाइन में खडा कर रखा था। जहाँ वो कभी खड़ी होती तो कभी थक कर बैठ जाती। इस संवाददाता ने उनके ऐसे हालात देख कर उनसे उनकी परेशानी पूछी तो उन्होंने अपना सारा दर्द बताया । इस पर उन्होंने डाक्टर से उनके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा की अभी 10-15 मिनट में इन्हें देख लेते है और रिपोर्ट बना देते है, यह 10-15 मिनट लगभग दो घंटे में पूरे हुए थे। दुलीचंद ने बाद में संवाददाता को बताया की वह घर आ गया था क्योंकि डाक्टर उसे दिल्ली रेफर की बात कर रहे थे, वह दिल्ली में एक दूकान पर सात हजार की नौकरी करके जैसे तैसे अपना गुजारा करते हैं। अब पता नहीं क्या होगा वैसे ही अस्पताल के चक्कर काटने में उनके चार-पांच सौ रुपय खर्च हो चुके है। और बात रही एमएलआर से पुलिस में रिपोर्ट करने के तो न जाने वहां भी कुछ देना न पड़ जाए , हम तो घर ही ठीक हैं।